मनुष्य के बेहद निकट है चिम्पैंज़ी

प्रमोद भार्गव

दिखने में व आदतों में बंदर जैसा होने के बावजूद चिम्पैंज़ी की पूंछ नहीं होती। इसलिए इसे मनुष्य के ज़्यादा निकट माना जाता है। चिम्पैंज़ी के पैर लंबे होने के साथ-साथ टखनों से उभरे होते हैं।

बंदरों की चार प्रजातियां चिम्पैंज़ी, वनमानुष, गोरिल्ला और गिब्बन मानव जाति के बहुत करीब हैं। इनमें भी चिम्पैंज़ी अपनी बौद्धिक व शारीरिक विशिष्टताओं व क्षमताओं के कारण मनुष्य के एकदम करीब है।

चिम्पैंज़ी अफ्रीका के वर्षा बहुल वनों और उष्ण कटिबंधीय जंगलों में पाए जाते हैं। पूर्ण वयस्क चिम्पैंज़ी का वज़न 36 से 50 किलोग्राम तक होता है। नर चिम्पैंज़ी मादा की तुलना में अधिक भारी होता है। इसका पूरा शरीर काले घने बालों से ढंका होता है। बाल काले, लंबे और चमकीले होते हैं। इसका चेहरा लंबा और आगे की ओर निकले हुए जबड़े वाला होता है। चिम्पैंज़ी के होंठ बेहद पतले और लचीले होते हैं; चेहरे की तुलना में कान बड़े व लंबे होते हैं; कानों का रंग हल्का काला होता है; भुजाएं लंबी होती हैं; उंगलियों की तुलना में अंगूठा छोटा होता है; छाती चौड़ी होती है।

दिखने में व आदतों में बंदर जैसा होने के बावजूद चिम्पैंज़ी की पूंछ नहीं होती। इसलिए इसे मनुष्य के ज़्यादा निकट माना जाता है। चिम्पैंज़ी के पैर लंबे होने के साथ-साथ टखनों से उभरे होते हैं।

कहां-कहां

फुरसत में चिम्पैंज़ी जंगलों से निकलकर खुले मैदानों में आकर थोड़ी-थोड़ी देर के लिए समय गुज़ारते हैं। वे चारों हाथ-पैरों के बल चौपाए की तरह घूमते हैं, पेड़ों की शाखाओं पर चढ़ते-उतरते हैं और पत्तियां खाते हैं, शाखों को ये अपनी भुजाओं से मज़बूती से पकड़कर झूलते हैं।

चिम्पैंज़ी अफ्रीका के सभी जंगली क्षेत्रों और देशों में पाए जाते हैं। ज़ांबिया, गुयाना, सीअरा लीओन, लाइबेरिया, सूडान, युगांडा, रवांडा और तंज़ानिया के अलावा इन्हें दुनिया भर के चिड़ियाघरों में भी देखा जा सकता है। पर्वतों पर ये 700 से 1100 फीट की ऊंचाई तक खूब देखे गए हैं। चिम्पैंज़ी की *पैन ट्रोग्लोडाइट्स* प्रजाति ही सबसे बड़े भूक्षेत्र में फैली हुई है। इनके भिन्न-भिन्न आकार, रंग और

मुखाकृति के अनुसार इन्हें चार उप-प्रजातियों में बांटा गया है। पिग्मी प्रजाति के चिम्पैंज़ी सबसे छोटे होते हैं लेकिन इनमें बौद्धिक क्षमता सबसे ज़्यादा होती है।

सहवास

जोड़ा बनाने के समय मादा लगातार 35 दिनों तक कामोत्तेजित रहती है। इस दौरान यह चिड़चिड़ी और झगड़ालू हो जाती है। नर व मादा एकांत में जाकर सहवास करते हैं। यदि इनका कोई छोटा शिशु होता है तो ये उसे भी समूह के साथ छोड़ जाते हैं। गर्भधारण के 225 दिन बाद मादा एक शिशु को जन्म देती है। अपवादस्वरूप एक बार में दो या अधिक शिशु भी पैदा होते हैं। इन शिशुओं का रंग शुरू में ताम्बई अथवा मांस जैसा होता है। जैसे-जैसे ये वयस्क होते हैं त्वचा का रंग काला होता चला जाता है।

शिशु

शिशु चिम्पैंज़ी मां की कोख से कसकर चिपका रहता है। कसकर चिपकने की इनमें सहजवृत्ति होती है। शिशु को मां अनेक बार पीठ पर बिठा लेती है। शिशु द्वारा भूख का अहसास कराए जाने पर उसे खाने के लिए फल व पत्तियां देती है अथवा अपने स्तनों से दूध पिलाती है। जब मादा किसी काम में व्यस्त रहती है तो शिशु को किसी वृक्ष की शाखा से लटका देती है। ऐसे में शिशु ज़ोर-ज़ोर से चीखते व चिल्लाते हैं, लेकिन वह कतई परवाह नहीं करती। मादा चिम्पैंज़ी और उनके समूह के अन्य चिम्पैंज़ी इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें शिशु के अधर में लटके रहने का अंदाज़ ही नहीं रहता।

किशोर

किशोर चिम्पैंज़ी अपनी मां के आवास के निकट ही अपना नया घर बना लेते हैं और समूह के हमउम्र चिम्पैंज़ियों

दीमक की बाम्बी में टहनी डालकर दीमक निकालकर खाता चिम्ज़ैंज़ी

चिड़ियाघरों में रखे गए चिम्पैंज़ियों के अध्ययन से पता चला है कि ये स्वाभाविक जीवन की अपेक्षा बंदी जीवन में अपनी बौद्धिक क्षमताओं का परिचय ज़्यादा देते हैं। चिम्पैंज़ी किसी एक कार्य को ज़्यादा लम्बे समय तक नहीं करते हैं, जबकि इनकी तुलना में गोरिल्ला में लम्बे समय तक एक ही कार्य करते रहने की क्षमता अधिक होती है।

से घुलना-मिलना शुरू कर देते हैं। वे खेलते हैं, कुश्ती लड़ते हैं और एक दूसरे को दौड़कर पकड़ते हैं। इनकी यही मुख्य दिनचर्या रहती है।

भोजन

चिम्पैंज़ी का मुख्य भोजन फल, फूल, पत्तियां, छाल और मेवा है। लेकिन ये चींटियां, दीमक और मांस भी चाव से खाते हैं। ये *कोलम्बस* प्रजाति के बंदरों और शिशु हिरणों का सामूहिक रूप से शिकार करते हैं। इनके शिकार का तरीका बेहद क्रूर होता है। ये पकड़े गए प्राणी को उछालकर गेंद की तरह चट्टान पर पटकते हैं और जब तक वह मर नहीं जाता उसे पटकते रहते हैं। खुले मैदानों में रहने वाले चिम्पैंज़ियों में प्रायः ऐसा देखा जाता है। बाद में ये शिकार किए गए प्राणी का मांस खाते हैं। चिम्पैंज़ियों को अपना ही मल खाते हुए भी देखा गया है। दीमक को आहार बनाते समय ये अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हैं। ये पेड़ की कोई टहनी तोड़ कर अलग करते हैं और टहनी को दीमक की बाम्बी में घुसेड़कर दीमक बाहर निकालकर खाते हैं (देखिए पिछले पृष्ठ का चित्र)। जंगली मधुमक्खियों का छत्ता तोड़कर ये उसका शहद भी बड़े ही चाव से खाते हैं।

समाज

ये बड़े समूहों में रहने के आदी होते हैं। एक समूह में 60 से 80 तक चिम्पैंज़ी होते हैं। इनका आवासीय क्षेत्र 20 वर्ग किलोमीटर तक का होता है। ये छोटे समूहों में बंटकर पूरे क्षेत्र में फैले रहते हैं। ये समूह चार प्रकार के होते हैं। एक समूह केवल नरों का होता है, दूसरा वयस्क नर व मादाओं का, तीसरा मादा व शिशुओं का और चौथा समूह मिश्रित चिम्पैंज़ियों का होता है।

आहार की तलाश में निकलते वक्त ये मादा व शिशुओं के समूह को एक निश्चित स्थान पर छोड़ देते हैं। नरों और वयस्क नर-मादाओं वाले समूह मिलकर आहार की खोज करते हैं। अच्छा व पर्याप्त आहार ढूंढ लेने पर ये विचित्र आवाज़ें निकालकर मादा व शिशुओं वाले समूह को भी अपने पास बुला लेते हैं और फिर सामूहिक रूप से भोजन करते हैं। उदरपूर्ति के बाद कुछ चिम्पैंज़ी फलों को हाथों में लिए हुए पैरों के बल चलकर अपने आवास स्थलों तक पहुंचते हैं।

अपने रास्तों में आने वाले नदी-नालों को ये छलांग लगाकर पार करते हैं। ज़्यादा चौड़ी नदी या नाले होने पर ये लकड़ी को पानी में तैराकर उस पर खड़े होकर उसे पार करते हैं।

आम तौर पर ये पेड़ पर 20 से 60 फीट की ऊंचाई पर आराम फरमाने के लिए घर बनाते हैं। ये पेड़ की शाखाओं को एक साथ करके एक प्लेटफॉर्म सा बना लेते हैं। यही इनका घर होता है। नवजात शिशु मादा के साथ सोते हैं, लेकिन नर अलग सोते हैं।

चिम्पैंज़ी शोरगुल पसंद जीव हैं। ये इतना हो-हल्ला मचाते हैं कि इनकी आवाज़ें तीन-चार किलोमीटर तक आसानी से सुनाई देती रहती हैं। इनके समूह का कोई मुखिया नहीं होता है।

चिड़ियाघरों में रखे गए चिम्पैंज़ियों के अध्ययन से पता चला है कि ये स्वाभाविक जीवन की अपेक्षा बंदी जीवन में अपनी बौद्धिक क्षमताओं का परिचय ज़्यादा देते हैं। चिम्पैंज़ी किसी एक कार्य को ज़्यादा लम्बे समय तक नहीं करते हैं, जबकि इनकी तुलना में गोरिल्ला में लम्बे समय तक एक ही कार्य करते रहने की क्षमता अधिक होती है। यही वजह है कि गोरिल्ला कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए लंबे समय तक जूझता है। ऐसे ही बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों के कारण चिम्पैंज़ी और गोरिल्ला को वनमानुष और गिब्बन की अपेक्षा मनुष्य के ज़्यादा निकट माना गया है। आदतों व यवहार में भी ये मनुष्य के ज़्यादा निकट होते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***